29 / 11 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सन्तुष्टता से प्रसन्नता और प्रशंसा की प्राप्ति होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा सन्तुष्ट मणि हूँ

➳ _ ➳ मैं एक चमकता हुआ सितारा भ्रुकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ

→ मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ

■ मैं आत्मा मन, बुद्धि और संस्कार की मालिक हूँ, अधिकारी हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा का बुद्धि रुपी पैर सदा बाबा की श्रीमत के अंदर ही रहता है

→ मैं आत्मा ब्रह्मा बाप के नक्शे कदम पर चलने वाली

■ बाबा की आज्ञाकारी बच्ची हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा की सूरत से सबको बाप की सीरत अनुभव हो रही है

→ मुझ आत्मा के नयनों में एक बाप नूर के समान समाया हुआ है

→ सबसे विशेष गुण, जो सन्तुष्टता है

■ वह मुझ आत्मा के चेहरे से स्पष्ट सबको अनुभव हो रहा है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा में तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता है

→ एक मैं आत्मा सदा बाप से सन्तुष्ट हूँ

→ दूसरा मैं आत्मा सदा अपने आप से सन्तुष्ट हूँ

→ तीसरा मुझ आत्मा के सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से मैं आत्मा सन्तुष्ट हूँ

■ मेरे प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को यह तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता में

■ पास विथ ऑनर का सर्टिफिकेट दे दिया है

➢➢ मैं सदा प्रसन्नचित आत्मा हूँ

➳ _ ➳ सन्तुष्टता की निशानी प्रत्यक्ष रूप में प्रसन्नता मुझ आत्मा के

→ चाल और चलन से स्पष्ट रुप मे सबको अनुभव हो रही है

➳ _ ➳ इस प्रसन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष फल

→ मुझ आत्मा को स्वतः ही सर्व से प्रशंसा दिलाता है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा की विशेषता है सन्तुष्टता

→ उसकी निशानी प्रसन्नता जो मुझ आत्मा ने धारण कर ली है

■ जिसका प्रत्यक्षफल मुझ आत्मा को सर्व से प्रशंसा मिल रही है

➳ _ ➳ बाबा ने मुझ आत्मा को सन्तुष्ट और प्रसन्नता का विशेष वरदान दे दिया है

→ अब मैं आत्मा विश्व की सभी आत्माओं को यह वरदान दे रही हूँ

■ इस यज्ञ की अन्तिम आहूति सर्व ब्राह्मणों की सदा प्रसन्नता है

■ तो अब मैं आत्मा सदा प्रसन्न रहती हूँ और सबको

■ सन्तुष्टता ओर प्रसन्नता का अनुभब करा रही हूँ

➢➢ प्रशंसा का अनुभव

➳ _ ➳ मैं आत्मा प्रशंसा को प्रसन्नता से ही प्राप्त करती हूँ

→ मैं आत्मा स्वयं से सदा सन्तुष्ट हूँ

→ मैं आत्मा सदा प्रसन्नचित रहती हूँ

■ इसलिए मुझ आत्मा की प्रशंसा सभी करते है

➳ _ ➳ प्रशंसा का श्रेष्ठ साधन भी मुझ आत्मा की प्रसन्नता है

→ कोई भी कार्य की प्रशंसा सर्व की प्रसन्नता पर आधार रखती है

■ इसलिए अब मैं आत्मा ऐसे ही कर्म करती हूँ कि

■ जिससे सभी आत्मा मुझसे सन्तुष्ट रहे

- और मेरे हर कर्म से मैं आत्मा बाबा की और
- सर्व आत्मा की प्रसन्नता के पात्र बनती हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने हर बोल, चाल और कर्म पर अटेंशन रखकर

→ बाप को प्रत्यक्ष करने के कार्य मे

- अपना तन-मन-धन लगाती हूँ

➳ _ ➳ बाबा से शक्तिशाली किरणे लेकर मैं आत्मा विश्व के कोने कोने में प्रवाहित कर रही हूँ

→ जन जन तक परमात्म सन्देश पहुँच रहा है

→ चारों तरफ प्रत्यक्षता की आवाज़ गूँज उठी है

- हर तरफ विजय का झण्डा लहरा रहा है